www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-17

International Journal Advanced Research Publications

Review Article

Volume: 02
Issue: 07

संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर का बौद्ध धम्म के प्रसार में योगदान

राजकुमार सागर*[1], डॉ. यशपाल[2]

[1]पी.एच.डी. शोधार्थी, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]डॉ. यशपाल, 2सहायक आचार्य, भाषा विभाग,स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

Article Received: 28 May 2026, Article Revised: 15 June 2026, Published on: 06 July 2026

***Corresponding Author: राजकुमार सागर**

पी.एच.डी. शोधार्थी, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.7510

शोध सार

संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर समकालीन भारत में बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण हस्ती के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने बौद्ध धर्म को केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न रखते हुए उसे शिक्षा, संस्कृति, चिकित्सा, सामाजिक सेवा और मानव कल्याण के व्यापक आयामों से जोड़ा। उनके प्रयासों से बौद्ध धम्म के मूल सिद्धांत—करुणा, मैत्री, अहिंसा, प्रज्ञा एवं समता—को समाज के विविध वर्गों तक पहुँचाने का कार्य हुआ। उन्होंने शैक्षिक संस्थानों में बौद्ध अध्ययन एवं अनुसंधान को प्रोत्साहित किया तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध विद्वानों, भिक्षुसंघों और शोधार्थियों के मध्य संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. मुक्ति भटनागर ने बोधि उपवन, बुद्ध प्रतिमाओं, स्तूपों तथा बौद्ध सांस्कृतिक स्थलों के निर्माण एवं संरक्षण द्वारा बौद्ध विरासत को जीवंत बनाए रखने का प्रयास किया। उन्होंने श्रीलंका, म्यांमार, नेपाल, थाईलैंड एवं वियतनाम जैसे बौद्ध देशों के साथ सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संबंध स्थापित कर वैश्विक धम्म-संवाद को सुदृढ़ किया। उनके नेतृत्व में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, धम्म-चर्चाओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बौद्ध अध्ययन को नई दिशा प्रदान की।

चिकित्सक एवं शिक्षाविद् होने के कारण उन्होंने करुणा को व्यवहारिक जीवन का आधार बनाया तथा स्वास्थ्य सेवा, महिला सशक्तिकरण और वंचित वर्गों के कल्याण को बौद्ध मानवतावाद से जोड़ने का प्रयास किया। इस प्रकार उनका योगदान केवल बौद्ध धर्म के प्रचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि

उन्होंने बौद्ध धम्म को समकालीन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्स्थापित करने का कार्य किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके बहुआयामी योगदान का विश्लेषण करते हुए बौद्ध धम्म के प्रसार एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण में उनकी भूमिका का मूल्यांकन किया गया है।

मुख्य शब्दः संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर, बौद्ध धम्म, धम्म-प्रचार, करुणा, मैत्री, बौद्ध संस्कृति, बौद्ध अध्ययन, बौद्ध पुनर्जागरण, सांस्कृतिक विरासत, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, अंतरराष्ट्रीय धम्म-संवाद, बोधि उपवन, मानवतावाद।

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म विश्व के उन महान धर्मों में से एक है जिसने मानवता को करुणा, अहिंसा, समता, सह-अस्तित्व और प्रज्ञा का सार्वभौमिक संदेश प्रदान किया है। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धम्म ने न केवल भारतीय समाज की वैचारिक संरचना को प्रभावित किया, बल्कि सम्पूर्ण एशिया और विश्व के अनेक देशों में नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का आधार भी निर्मित किया। बौद्ध धर्म का मूल उद्देश्य मानव को दुःख, तृष्णा और अज्ञान से मुक्त कर एक संतुलित, नैतिक और कल्याणकारी जीवन की ओर अग्रसर करना है। यही कारण है कि आज भी बौद्ध धम्म को विश्व शांति, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों की स्थापना का प्रभावी माध्यम माना जाता है।

आधुनिक युग में जब समाज अनेक प्रकार की चुनौतियों—हिंसा, असहिष्णुता, मानसिक तनाव, सामाजिक विषमता और सांस्कृतिक विघटन—का सामना कर रहा है, तब बौद्ध धम्म की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। ऐसे समय में कुछ व्यक्तित्व ऐसे उभरकर सामने आए जिन्होंने बौद्ध मूल्यों को केवल ग्रंथों तक सीमित न रखकर उन्हें सामाजिक जीवन में क्रियान्वित करने का प्रयास किया। संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर इसी श्रेणी की एक विशिष्ट व्यक्तित्व थीं, जिन्होंने शिक्षा, चिकित्सा, संस्कृति और सेवा के माध्यम से बौद्ध धम्म के प्रसार को नई दिशा प्रदान की।

डॉ. मुक्ति भटनागर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक सफल चिकित्सक, शिक्षाविद्, प्रशासक, समाजसेवी तथा बौद्ध संस्कृति की संरक्षक थीं। उन्होंने बौद्ध धर्म को केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय नहीं माना, बल्कि उसे मानव कल्याण और सामाजिक परिवर्तन का साधन समझा। उनके नेतृत्व में अनेक ऐसे कार्य संपन्न हुए जिन्होंने बौद्ध धम्म को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने विश्वविद्यालयीय स्तर पर बौद्ध अध्ययन एवं शोध को प्रोत्साहित किया, बौद्ध विषयक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कराया तथा बौद्ध विद्वानों और शोधार्थियों के लिए अनुकूल शैक्षणिक वातावरण तैयार किया।

डॉ. मुक्ति भटनागर का एक महत्वपूर्ण योगदान बौद्ध सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है। उन्होंने बोधिवृक्ष, स्तूप, बुद्ध प्रतिमाओं तथा धम्म-स्थलों के निर्माण और संरक्षण के माध्यम से बौद्ध संस्कृति को दृश्य एवं जीवंत स्वरूप प्रदान किया। उनका मानना था कि बौद्ध धम्म केवल अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि जीवन में आत्मसात किए जाने वाला आचरण है। इसलिए उन्होंने ऐसे वातावरण के निर्माण पर बल दिया जहाँ विद्यार्थी और समाज बुद्ध के आदर्शों को व्यवहार में अनुभव कर सकें।उनकी दृष्टि राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं थी। उन्होंने श्रीलंका, म्यांमार, नेपाल, थाईलैंड और वियतनाम जैसे बौद्ध देशों के भिक्षुसंघों, विद्वानों एवं संस्थाओं के साथ संपर्क स्थापित कर अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सहयोग को सुदृढ़ किया। इस प्रकार उन्होंने सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक धम्म-संवाद को बढ़ावा देकर भारत की बौद्ध विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

करुणा और सेवा उनके जीवन-दर्शन के मूल आधार थे। उन्होंने चिकित्सा सेवा को बौद्ध मानवतावाद का व्यावहारिक स्वरूप माना तथा समाज के वंचित, पीड़ित और उपेक्षित वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया। महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी उनके प्रयास उल्लेखनीय रहे। उन्होंने यह स्थापित किया कि बौद्ध धम्म का वास्तविक स्वरूप केवल आध्यात्मिक साधना में नहीं, बल्कि मानव सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व में भी निहित है।प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर के जीवन एवं कार्यों का अध्ययन करते हुए बौद्ध धम्म के प्रसार में उनके योगदान का सम्यक् मूल्यांकन करना है। साथ ही यह शोध यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि आधुनिक भारत में बौद्ध सांस्कृतिक पुनर्जागरण, शैक्षिक विकास, सामाजिक सेवा तथा अंतरराष्ट्रीय धम्म-संवाद के क्षेत्र में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणास्पद रही है। उनके कार्य यह प्रमाणित करते हैं कि बौद्ध धम्म आज भी मानवता के कल्याण और वैश्विक शांति की स्थापना का एक प्रभावी मार्ग है।

संघमाताडॉ. मुक्तिभटनागर : जीवनपरिचयएवंबौद्धधम्मसेजुड़ाव

डॉ. मुक्ति भटनागर (1957–2021) आधुनिक भारत की उन विशिष्ट शिक्षाविदों, चिकित्सकों और समाजसेवियों में से थीं जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, मानव सेवा तथा बौद्ध धम्म के मूल्यों को एक साथ जोड़कर समाज के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त किया। वे सुभारती ग्रुप तथा स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय की संस्थापक एवं प्रबंध न्यासी थीं। उन्हें बौद्ध धर्म, शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के कारण "संघमाता" की सम्मानित उपाधि प्रदान की गई थी। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था, जिसमें एक कुशल चिकित्सक, संवेदनशील शिक्षाविद, दूरदर्शी प्रशासक, कला-प्रेमी तथा मानवतावादी समाजसेवी का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

डॉ. मुक्ति भटनागर का जन्म वर्ष 1957 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में हुआ था। प्रारम्भ से ही वे मेधावी, अनुशासित एवं सेवा-भावना से युक्त थीं। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा प्रतिष्ठित मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज, इलाहाबाद से प्राप्त की तथा वहीं से एम.बी.बी.एस. एवं एम.डी. (जनरल मेडिसिन) की उपाधियाँ अर्जित कीं। चिकित्सा शिक्षा के दौरान ही उन्होंने यह अनुभव किया कि केवल रोगों का उपचार पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज के समग्र उत्थान के लिए शिक्षा, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का विकास भी आवश्यक है। यही विचार आगे चलकर उनके जीवन-दर्शन का आधार बना।

चिकित्सा क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने पति डॉ. अतुल कृष्ण के साथ मिलकर मेरठ में 'सुभारती' की स्थापना की। उनका उद्देश्य केवल एक शैक्षणिक संस्थान की स्थापना करना नहीं था, बल्कि ऐसा समग्र सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण निर्मित करना था जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समन्वित विकास हो सके। उनके मार्गदर्शन में सुभारती एक छोटे प्रयास से विकसित होकर एक विशाल शैक्षणिक एवं सामाजिक संगठन के रूप में स्थापित हुआ। स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय आज देश-विदेश के हजारों विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहा है, जो उनकी दूरदर्शी सोच और अथक परिश्रम का परिणाम है।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उनके द्वारा स्थापित छत्रपति शिवाजी सुभारती चैरिटेबल अस्पताल उत्तर भारत के प्रमुख चिकित्सा संस्थानों में से एक है, जहाँ 1100 से अधिक बिस्तरों की सुविधा उपलब्ध है। इस अस्पताल की स्थापना का उद्देश्य केवल चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करना नहीं था, बल्कि आर्थिक रूप से कमजोर एवं वंचित वर्गों को सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना भी था। उन्होंने चिकित्सा को मानव सेवा का माध्यम माना और करुणा, सहानुभूति तथा सेवा को चिकित्सा का अभिन्न अंग समझा।

डॉ. मुक्ति भटनागर की रुचियाँ केवल शिक्षा और चिकित्सा तक सीमित नहीं थीं। वे चित्रकला, संगीत, साहित्य और सांस्कृतिक गतिविधियों से भी गहराई से जुड़ी हुई थीं। उनका मानना था कि कला और संस्कृति मनुष्य के व्यक्तित्व को संवेदनशील बनाती हैं तथा समाज में सौहार्द और मानवीय मूल्यों को विकसित करती हैं। इसी कारण उन्होंने सुभारती परिसर में सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों को विशेष प्रोत्साहन दिया।बौद्ध धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था और समर्पण ने उन्हें विशेष पहचान प्रदान की। उन्होंने बौद्ध धम्म के करुणा, मैत्री, अहिंसा और मानव कल्याण जैसे मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात किया। उनके प्रयासों से सुभारती परिसर में अनेक बौद्ध स्मारकों, बुद्ध प्रतिमाओं, स्तूपों तथा बोधि उपवन की स्थापना हुई। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध विद्वानों, भिक्षुओं और

शोधार्थियों को एक मंच प्रदान कर बौद्ध अध्ययन और संवाद को नई दिशा दी। इसी योगदान के कारण उन्हें "संघमाता" के रूप में सम्मानित किया गया।

समाज सेवा, शिक्षा, चिकित्सा और बौद्ध धम्म के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया, जिनमें 'महिला गौरव सम्मान' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये सम्मान उनके बहुआयामी योगदान और समाज के प्रति समर्पण का प्रमाण हैं।जीवन के अंतिम वर्षों में वे कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से संघर्ष करती रहीं। कोविड-19 संक्रमण ने उनके स्वास्थ्य को और अधिक प्रभावित किया। अंततः 7 जून 2021 को मेरठ में उनका निधन हो गया। यद्यपि उनका भौतिक जीवन समाप्त हो गया, किन्तु उनके द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान, चिकित्सा सेवाएँ, सामाजिक कार्य तथा बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए प्रयास आज भी उनकी जीवंत विरासत के रूप में विद्यमान हैं।डॉ. मुक्ति भटनागर का जीवन सेवा, समर्पण, करुणा और नेतृत्व का प्रेरणादायी उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि शिक्षा, चिकित्सा और मानव सेवा के माध्यम से समाज में स्थायी परिवर्तन लाया जा सकता है। उनके कार्य और आदर्श आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर का व्यक्तित्व केवल एक शिक्षाविद्, चिकित्सक अथवा प्रशासक तक सीमित नहीं था, बल्कि वे आधुनिक भारत में बौद्ध धम्म की जीवंत प्रतिनिधि के रूप में भी प्रतिष्ठित थीं। उनका जीवन मानव सेवा, शिक्षा, करुणा तथा आध्यात्मिक चेतना के समन्वय का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बौद्ध धम्म के मूल सिद्धांतों—करुणा, मैत्री, प्रज्ञा और सेवा—को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। यही कारण है कि उन्हें अनेक बौद्ध विद्वानों एवं भिक्षुओं द्वारा सम्मानपूर्वक "संघमाता" की संज्ञा दी गई।

डॉ. मुक्ति भटनागर का प्रारम्भिक जीवन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से अनुप्राणित था। चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने चिकित्सकीय सेवा को केवल एक पेशा न मानकर मानव कल्याण का माध्यम बनाया। रोगी की पीड़ा को समझने और उसके प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की उनकी प्रवृत्ति बौद्ध करुणा-दर्शन से गहराई से जुड़ी हुई थी। बुद्ध ने दुःख और उसके निवारण को अपने दर्शन का केन्द्र बनाया था। इसी प्रकार डॉ. मुक्ति भटनागर ने भी मानव दुःख को समझने और उसके समाधान के लिए शिक्षा, चिकित्सा तथा सामाजिक सेवा को साधन बनाया।बौद्ध धम्म के प्रति उनकी आस्था किसी औपचारिक धार्मिक झुकाव का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह उनके जीवनानुभवों और मानवीय दृष्टिकोण का स्वाभाविक विस्तार थी। उन्होंने बुद्ध के उपदेशों को केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें जीवन में उतारने का प्रयास किया। उनके विचार में बौद्ध धर्म किसी विशेष समुदाय

का धर्म न होकर सम्पूर्ण मानवता के लिए करुणा और सह-अस्तित्व का मार्ग है। इसी कारण उन्होंने धम्म को सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से जोड़कर देखा।

स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय की स्थापना और विकास के दौरान उन्होंने बौद्ध मूल्यों को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया। विश्वविद्यालय परिसर में बुद्ध प्रतिमाओं, स्तूपों, बोधि उपवनों और ध्यान स्थलों की स्थापना केवल सौन्दर्य-वृद्धि के लिए नहीं थी, बल्कि उनका उद्देश्य विद्यार्थियों और शोधार्थियों को बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के निकट लाना था। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न मानकर व्यक्तित्व निर्माण और मानवीय मूल्यों के विकास का माध्यम माना।डॉ. मुक्ति भटनागर ने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बौद्ध कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाई। उन्होंने श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, नेपाल तथा वियतनाम जैसे देशों के बौद्ध संघों और विद्वानों के साथ संवाद स्थापित कर बौद्ध धम्म के वैश्विक स्वरूप को समझने और उसे भारत में पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। उनके नेतृत्व में अनेक बौद्ध सम्मेलन, संगोष्ठियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिनसे धम्म के प्रति नई पीढ़ी में रुचि विकसित हुई।उनकी दृष्टि में बौद्ध धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है। उन्होंने करुणा को चिकित्सा से, मैत्री को शिक्षा से, और प्रज्ञा को अनुसंधान से जोड़कर एक ऐसे मॉडल की स्थापना की जिसमें धम्म जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय दिखाई देता है। यही कारण है कि उनका सम्पूर्ण जीवन बौद्ध धम्म के व्यावहारिक स्वरूप का उदाहरण माना जा सकता है।इस प्रकार संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर का जीवन यह सिद्ध करता है कि आधुनिक युग में भी बुद्ध के विचारों को समाज, शिक्षा और संस्कृति के माध्यम से जीवंत बनाया जा सकता है। उनका जीवन परिचय बौद्ध धम्म के प्रति समर्पण, सेवा और मानवीय मूल्यों की प्रेरक गाथा है।

बौद्ध शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान

डॉ. मुक्ति भटनागर का मानना था कि किसी भी दर्शन या संस्कृति का स्थायी विकास तभी संभव है जब उसे शिक्षा और अनुसंधान का आधार प्राप्त हो। इसी विचार को केंद्र में रखते हुए उन्होंने बौद्ध अध्ययन को विश्वविद्यालयीय शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाने का प्रयास किया। उनके अनुसार बौद्ध धम्म केवल धार्मिक अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि मानव सभ्यता, नैतिकता, शांति, पर्यावरण और सामाजिक न्याय के अध्ययन का भी महत्वपूर्ण आधार है।उन्होंने स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन एवं शोध को विशेष महत्व प्रदान किया। उनके प्रयासों से विश्वविद्यालय में बौद्ध दर्शन, पाली साहित्य, बौद्ध इतिहास तथा बौद्ध संस्कृति से संबंधित शोध कार्यों को प्रोत्साहन मिला। अनेक शोधार्थियों ने बौद्ध धर्म के विभिन्न पक्षों पर शोध कर अकादमिक जगत को नई दिशाएँ प्रदान कीं।

डॉ. मुक्ति भटनागर की विशेषता यह थी कि उन्होंने बौद्ध अध्ययन को केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वानों, भिक्षुओं और शोधकर्ताओं को एक मंच पर लाकर संवाद की परंपरा को विकसित किया। उनके संरक्षण में आयोजित संगोष्ठियाँ और सम्मेलन बौद्ध चिंतन के समकालीन आयामों पर केन्द्रित होते थे, जिनमें शांति, करुणा, मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर चर्चा होती थी।उन्होंने पाली भाषा और बौद्ध साहित्य के संरक्षण को भी महत्वपूर्ण माना। उनके प्रयासों से पाली अध्ययन के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़ी तथा अनेक विद्वानों को शोध के अवसर प्राप्त हुए। उनके अनुसार पाली भाषा केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि बुद्ध के मूल उपदेशों तक पहुँचने का माध्यम है। इसलिए उन्होंने पाली साहित्य के अध्ययन और अनुवाद को विशेष महत्व दिया।

डॉ. मुक्ति भटनागर ने बौद्ध शिक्षा को वैश्विक संदर्भों से जोड़ने का भी प्रयास किया। उन्होंने विदेशी विश्वविद्यालयों और बौद्ध संस्थानों के साथ अकादमिक सहयोग स्थापित किया। इससे विद्यार्थियों और शोधार्थियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध अध्ययन की नई प्रवृत्तियों से परिचित होने का अवसर मिला। उनके प्रयासों से विश्वविद्यालय एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित हुआ जहाँ भारतीय और विदेशी विद्वान मिलकर बौद्ध धम्म पर विचार-विमर्श कर सकें।उन्होंने बौद्ध शिक्षा को मूल्यपरक शिक्षा से भी जोड़ा। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग और करुणा के सिद्धांतों को उन्होंने आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक माना। यही कारण है कि उनके शैक्षिक दृष्टिकोण में ज्ञान के साथ-साथ चरित्र निर्माण पर भी विशेष बल दिया गया।

बौद्ध अनुसंधान के क्षेत्र में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने शोधार्थियों को केवल ऐतिहासिक अध्ययन तक सीमित न रहने की प्रेरणा दी, बल्कि बौद्ध दर्शन की समकालीन उपयोगिता पर भी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म और महिला अध्ययन, बौद्ध धर्म और चिकित्सा, बौद्ध धर्म और पर्यावरण, तथा बौद्ध धर्म और सामाजिक न्याय जैसे नए शोध-विषय विकसित हुए।अतः कहा जा सकता है कि डॉ. मुक्ति भटनागर ने शिक्षा और अनुसंधान को धम्म-प्रसार का सबसे प्रभावी माध्यम बनाकर बौद्ध अध्ययन को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने का कार्य किया। उनका योगदान आधुनिक भारत में बौद्ध अकादमिक पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण अध्याय है।

बौद्ध सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन में भूमिका

डॉ. मुक्ति भटनागर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान बौद्ध सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में रहा है। उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि किसी संस्कृति को जीवित रखना है तो

उसके प्रतीकों, स्मारकों और सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना आवश्यक है। इसी दृष्टि से उन्होंने बौद्ध धरोहरों को केवल ऐतिहासिक स्मृति के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक चेतना के रूप में विकसित करने का प्रयास किया।उनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय परिसर में अनेक बुद्ध प्रतिमाओं की स्थापना की गई। इन प्रतिमाओं का उद्देश्य केवल धार्मिक आस्था का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि विद्यार्थियों और आगंतुकों को बुद्ध के शांति और करुणा के संदेश से जोड़ना था। प्रत्येक प्रतिमा बौद्ध दर्शन के किसी न किसी पक्ष का प्रतीक बनकर खड़ी दिखाई देती है।उन्होंने स्तूपों के निर्माण और संरक्षण को भी विशेष महत्व दिया। बौद्ध परंपरा में स्तूप केवल स्थापत्य कला का उदाहरण नहीं, बल्कि स्मृति, श्रद्धा और आध्यात्मिक प्रेरणा के केन्द्र होते हैं। डॉ. मुक्ति भटनागर ने स्तूपों को आधुनिक पीढ़ी के लिए धम्म-चेतना के केन्द्र के रूप में विकसित करने का प्रयास किया।उनकी सबसे उल्लेखनीय पहलों में से एक बोधि उपवन की स्थापना थी। बोधिवृक्ष बुद्धत्व और ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। डॉ. मुक्ति भटनागर ने बोधि उपवन को केवल वृक्षारोपण कार्यक्रम के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे आध्यात्मिक और पर्यावरणीय चेतना के समन्वय का प्रतीक बनाया। इस प्रकार उन्होंने बौद्ध धर्म और पर्यावरण संरक्षण के बीच एक नया संबंध स्थापित किया।

उन्होंने ध्यान केन्द्रों और धम्म-स्थलों के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया। आधुनिक जीवन की तनावपूर्ण परिस्थितियों में ध्यान की उपयोगिता को समझते हुए उन्होंने ऐसे वातावरण के निर्माण का प्रयास किया जहाँ विद्यार्थी और सामान्य लोग मानसिक शांति तथा आत्मिक संतुलन प्राप्त कर सकें। यह पहल बौद्ध ध्यान परंपरा को आधुनिक समाज से जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रयास थी।डॉ. मुक्ति भटनागर ने बौद्ध सांस्कृतिक धरोहरों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाने का प्रयास किया। उनके प्रयासों से विभिन्न देशों के भिक्षु, विद्वान और पर्यटक इन स्थलों से जुड़े और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला। इससे विश्वविद्यालय परिसर एक प्रकार के आधुनिक बौद्ध सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।उनकी दृष्टि में सांस्कृतिक संरक्षण का अर्थ केवल अतीत की रक्षा करना नहीं, बल्कि उसे वर्तमान और भविष्य से जोड़ना है। इसलिए उन्होंने धम्म-स्थलों को शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना के केंद्रों के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की। यह दृष्टिकोण उन्हें अन्य संस्थापकों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

इस प्रकार बौद्ध सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और संवर्धन में डॉ. मुक्ति भटनागर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी है। उन्होंने बुद्ध प्रतिमाओं, स्तूपों, बोधि उपवनों और ध्यान केन्द्रों के माध्यम से बौद्ध संस्कृति को केवल संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उसे नई पीढ़ी के लिए जीवंत और प्रासंगिक भी बनाया। यही उनकी स्थायी सांस्कृतिक विरासत है।

अंतरराष्ट्रीय बौद्ध धम्म-संवाद और सांस्कृतिक कूटनीति

डॉ. मुक्ति भटनागर का बौद्ध धम्म के प्रसार में योगदान केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने बौद्ध धर्म को वैश्विक संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का माध्यम बनाकर उसे एक नई दिशा प्रदान की। आधुनिक युग में जब विश्व विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और वैचारिक संघर्षों से जूझ रहा है, तब डॉ. मुक्ति भटनागर ने बौद्ध धम्म के सार्वभौमिक मूल्यों—शांति, करुणा, सहिष्णुता और मैत्री—को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि मानवता को जोड़ने वाली वैश्विक सांस्कृतिक धरोहर है। इसी दृष्टि से उन्होंने श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, नेपाल, वियतनाम, जापान तथा अन्य बौद्ध देशों के भिक्षुसंघों, विद्वानों और सांस्कृतिक संस्थानों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित किए।

डॉ. मुक्ति भटनागर की विशेषता यह थी कि उन्होंने बौद्ध धम्म को केवल शैक्षणिक अध्ययन का विषय न मानकर उसे अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) का प्रभावी साधन बनाया। उनके प्रयासों से विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षुओं, शोधार्थियों तथा शिक्षाविदों को एक साझा मंच प्राप्त हुआ, जहाँ वे बौद्ध दर्शन, संस्कृति और समकालीन सामाजिक चुनौतियों पर विचार-विमर्श कर सकें। उन्होंने अनेक अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलनों, संगोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा समर्थन किया, जिनके माध्यम से भारत की प्राचीन बौद्ध विरासत और आधुनिक बौद्ध चेतना को वैश्विक समुदाय तक पहुँचाया गया। इस प्रकार वे आधुनिक काल में बौद्ध सांस्कृतिक संवाद की एक महत्वपूर्ण सूत्रधार के रूप में उभरकर सामने आईं।

उनके प्रयासों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि उन्होंने बौद्ध देशों के साथ संबंधों को केवल औपचारिक राजनयिक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। श्रीलंका के भिक्षुसंघों के साथ उनके घनिष्ठ संबंधों ने भारत और श्रीलंका के मध्य बौद्ध विरासत की साझा चेतना को सुदृढ़ किया। म्यांमार तथा थाईलैंड के बौद्ध विद्वानों के साथ संवाद के माध्यम से उन्होंने थेरवाद बौद्ध परंपरा के अध्ययन और संरक्षण को बढ़ावा दिया। नेपाल और वियतनाम के बौद्ध संगठनों के साथ सहयोग ने महायान तथा वज्रयान परंपराओं के प्रति भारतीय विद्यार्थियों और शोधार्थियों की समझ को समृद्ध किया। इस प्रकार उनका कार्य विभिन्न बौद्ध परंपराओं के मध्य समन्वय और सहयोग का सेतु सिद्ध हुआ।

डॉ. मुक्ति भटनागर ने अंतरराष्ट्रीय बौद्ध धम्म-संवाद को केवल धार्मिक विमर्श तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक विकास और विश्व शांति से भी जोड़ा। उनका विश्वास था कि बुद्ध का संदेश सम्पूर्ण मानवता के लिए है और उसकी प्रासंगिकता राष्ट्रीय सीमाओं से परे है। इसी कारण

उन्होंने विदेशी विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को भारतीय बौद्ध स्थलों, बौद्ध साहित्य और भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं से परिचित कराने के अनेक प्रयास किए। उनके नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रमों ने भारत को पुनः बौद्ध ज्ञान और संस्कृति के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।विशेष रूप से स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय के माध्यम से उन्होंने अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग को नई गति प्रदान की। विभिन्न देशों से आने वाले बौद्ध भिक्षुओं, शोधार्थियों और विद्वानों को विश्वविद्यालय में अध्ययन, शोध और संवाद का अवसर प्रदान किया गया। इससे न केवल शैक्षणिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के मध्य परस्पर समझ और सम्मान की भावना भी विकसित हुई। यह प्रयास प्राचीन नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों की उस महान परंपरा की याद दिलाता है, जहाँ विश्व के विभिन्न भागों से विद्यार्थी ज्ञानार्जन हेतु आते थे।

डॉ. मुक्ति भटनागर का योगदान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने बौद्ध धम्म को "सॉफ्ट पावर" के रूप में स्थापित करने की संभावना को पहचाना। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सांस्कृतिक कूटनीति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। उन्होंने बौद्ध संस्कृति, कला, साहित्य और दर्शन को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत कर भारत की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करने में योगदान दिया। उनके द्वारा स्थापित संपर्कों और सहयोगों ने भारत की बौद्ध विरासत को विश्व समुदाय के समक्ष पुनः प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार उनका कार्य सांस्कृतिक राष्ट्रनिर्माण और अंतरराष्ट्रीय सद्भाव दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

डॉ. मुक्ति भटनागर ने यह भी समझा कि वैश्वीकरण के युग में बौद्ध धर्म की भूमिका केवल अतीत की विरासत तक सीमित नहीं रह सकती। उन्होंने बौद्ध धम्म के मूल सिद्धांतों को समकालीन वैश्विक समस्याओं—जैसे हिंसा, आतंकवाद, सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट और सांस्कृतिक संघर्ष—के समाधान से जोड़ने का प्रयास किया। उनके विचार में करुणा, मैत्री और अहिंसा पर आधारित बौद्ध दृष्टिकोण विश्व शांति के लिए एक प्रभावी वैचारिक आधार प्रदान कर सकता है। इसलिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बौद्ध धर्म को शांति और सह-अस्तित्व के दर्शन के रूप में प्रस्तुत करने का निरंतर प्रयास किया।उनके नेतृत्व में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों ने अनेक देशों के विद्वानों को एक-दूसरे के अनुभवों और दृष्टिकोणों से सीखने का अवसर प्रदान किया। इससे बौद्ध अध्ययन का दायरा विस्तृत हुआ और नई शोध-दिशाओं का विकास हुआ। बौद्ध साहित्य, पुरातत्व, कला, संस्कृति, पर्यावरण और मानवाधिकार जैसे विषयों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए विमर्शों में उनकी सक्रिय भूमिका रही। इस प्रकार वे केवल आयोजक या संरक्षक नहीं थीं, बल्कि एक ऐसी चिंतक थीं जिन्होंने बौद्ध धम्म को समकालीन वैश्विक विमर्श का हिस्सा बनाने का प्रयास किया।

करुणा, मैत्री और मानव सेवा पर आधारित धम्म-दृष्टि

डॉ. मुक्ति भटनागर के व्यक्तित्व का सबसे प्रभावशाली पक्ष उनकी करुणामय धम्म-दृष्टि थी। उन्होंने बौद्ध धर्म को केवल दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह नहीं माना, बल्कि उसे जीवन के व्यवहारिक पक्ष से जोड़ा। उनके लिए धम्म का वास्तविक अर्थ था—मानवता की सेवा, पीड़ितों के प्रति संवेदनशीलता और समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए सतत प्रयास। उन्होंने बुद्ध के करुणा और मैत्री के संदेश को अपने जीवन तथा कार्यों में मूर्त रूप प्रदान किया। यही कारण है कि उनका योगदान केवल शिक्षा या प्रशासन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह व्यापक लोककल्याण और मानव सेवा के क्षेत्र तक विस्तृत हुआ।

एक चिकित्सक होने के कारण उन्होंने मानव पीड़ा को निकट से देखा और समझा। उन्होंने चिकित्सा सेवा को केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि करुणा पर आधारित सामाजिक उत्तरदायित्व माना। उनके प्रयासों से स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ और समाज के निर्धन एवं वंचित वर्गों को चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में अनेक कार्य किए गए। उनके विचार में रोगी केवल उपचार का विषय नहीं, बल्कि सम्मान और संवेदना का पात्र है। यह दृष्टिकोण बुद्ध के उस आदर्श से प्रेरित था जिसमें रोगी की सेवा को सर्वोच्च पुण्य माना गया है।डॉ. मुक्ति भटनागर ने शिक्षा और सेवा को एक-दूसरे का पूरक माना। उन्होंने ऐसे शैक्षणिक वातावरण के निर्माण का प्रयास किया जहाँ विद्यार्थियों में केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनशीलता का भी विकास हो। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के प्रति दायित्वबोध विकसित करना है। इसी कारण उन्होंने विद्यार्थियों को सेवा-कार्य, सामाजिक जागरूकता और जनकल्याण की गतिविधियों से जोड़ने पर विशेष बल दिया।

महिला उत्थान के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। उन्होंने यह समझा कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब महिलाएँ शिक्षित, आत्मनिर्भर और सशक्त हों। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयास किए। उनके कार्यों में बौद्ध धम्म की करुणा और समानता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने महिलाओं को केवल संरक्षण का विषय न मानकर उन्हें समाज निर्माण की सक्रिय शक्ति के रूप में देखा।निर्धन और वंचित वर्गों के प्रति उनकी संवेदनशीलता भी अत्यंत प्रेरणादायक थी। उन्होंने सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के मूल्यों को बढ़ावा दिया तथा समाज के उन वर्गों तक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने का प्रयास किया जो मुख्यधारा से दूर थे। उनके लिए सेवा का अर्थ केवल दान देना नहीं था, बल्कि लोगों को आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन जीने योग्य बनाना था। यह दृष्टिकोण बौद्ध मानवतावाद का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

डॉ. मुक्ति भटनागर का मानना था कि करुणा केवल भावना नहीं, बल्कि सक्रिय कर्म है। इसलिए उन्होंने करुणा को व्यवहार में उतारने पर बल दिया। उनके नेतृत्व में चलने वाली अनेक गतिविधियाँ इसी विचार से प्रेरित थीं कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, अवसर और सहयोग मिलना चाहिए। उन्होंने मानव सेवा को धम्म-साधना का रूप प्रदान किया और यह दिखाया कि आधुनिक युग में भी बुद्ध का संदेश उतना ही प्रासंगिक है जितना ढाई हजार वर्ष पूर्व था।

महिला सशक्तिकरण और बौद्ध नारी चेतना

डॉ. मुक्ति भटनागर का व्यक्तित्व आधुनिक भारत में बौद्ध नारी चेतना के एक सशक्त प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि महिला केवल परिवार या समाज की सहयोगी नहीं, बल्कि नेतृत्व, शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन की केंद्रीय शक्ति भी हो सकती है। बौद्ध परंपरा में महाप्रजापति गौतमी, संघमित्रा, विशाखा और खेमा जैसी महान महिलाओं ने धम्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आधुनिक युग में डॉ. मुक्ति भटनागर ने उसी गौरवशाली परंपरा को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की।उन्होंने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना। उनके प्रयासों से बड़ी संख्या में महिलाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिले। उनका विश्वास था कि शिक्षा महिलाओं को आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता प्रदान करती है। इसलिए उन्होंने ऐसे संस्थानों के विकास पर बल दिया जहाँ महिलाएँ सुरक्षित, सम्मानजनक और प्रेरणादायक वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर सकें। यह दृष्टिकोण केवल शैक्षणिक नहीं था, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की व्यापक योजना का हिस्सा था।

डॉ. मुक्ति भटनागर ने महिलाओं को नेतृत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा और सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में महिलाएँ प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। उनके जीवन का उदाहरण स्वयं इस तथ्य का प्रमाण है कि दृढ़ संकल्प, परिश्रम और दूरदर्शिता के माध्यम से महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं। इस प्रकार वे नई पीढ़ी की महिलाओं के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गईं।बौद्ध नारी चेतना का एक महत्वपूर्ण तत्व समानता और गरिमा है। डॉ. मुक्ति भटनागर ने अपने कार्यों में इन मूल्यों को व्यवहारिक रूप दिया। उन्होंने महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी, शिक्षा के अवसर और सामाजिक सम्मान दिलाने के लिए निरंतर प्रयास किए। उनके विचार में महिला सशक्तिकरण केवल अधिकार प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के विकास की यात्रा है।उन्होंने महिला सशक्तिकरण को केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज के समग्र विकास से जोड़ा। उनका मानना था कि जब महिलाएँ शिक्षित और सक्षम बनती हैं तो परिवार, समाज और राष्ट्र सभी लाभान्वित होते हैं। इसलिए उन्होंने

महिलाओं के लिए ऐसे अवसर सृजित करने पर बल दिया जो उन्हें आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से सशक्त बना सकें।इस प्रकार डॉ. मुक्ति भटनागर को बौद्ध परंपरा की महान स्त्री-प्रतिमाओं की आधुनिक उत्तराधिकारी कहा जा सकता है। उन्होंने शिक्षा, सेवा, नेतृत्व और धम्म-प्रसार के माध्यम से यह सिद्ध किया कि बौद्ध नारी चेतना आज भी समाज को नई दिशा देने में सक्षम है। उनका जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि जब करुणा, ज्ञान और नेतृत्व का समन्वय होता है, तब सामाजिक परिवर्तन की नई संभावनाएँ जन्म लेती हैं।

21वीं शताब्दी में बौद्ध धम्म के पुनर्जागरण में डॉ. मुक्ति भटनागर का योगदान

इक्कीसवीं शताब्दी विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और तीव्र भौतिक विकास का युग है। एक ओर मानव सभ्यता अभूतपूर्व प्रगति कर रही है, तो दूसरी ओर हिंसा, असहिष्णुता, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक विघटन तथा नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी निरंतर बढ़ रही हैं। ऐसे समय में बौद्ध धम्म की करुणा, मैत्री, अहिंसा, समता और प्रज्ञा पर आधारित शिक्षाएँ पुनः विश्व का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। आधुनिक युग में बौद्ध धम्म का पुनर्जागरण केवल धार्मिक पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि यह मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का एक व्यापक आंदोलन है। इस संदर्भ में संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने बौद्ध धम्म को केवल अतीत की विरासत के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे समकालीन समाज की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने वाली जीवंत विचारधारा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

डॉ. मुक्ति भटनागर का कार्यक्षेत्र शिक्षा, चिकित्सा, समाज सेवा, महिला सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संवाद तक विस्तृत था। उन्होंने अपने जीवन में बौद्ध धम्म के मूल आदर्शों को व्यवहार में उतारते हुए यह सिद्ध किया कि बुद्ध का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना ढाई हजार वर्ष पूर्व था। उनके प्रयासों ने बौद्ध धम्म को आधुनिक भारत और वैश्विक समाज के बीच एक नई पहचान प्रदान की।डॉ. मुक्ति भटनागर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में यह थी कि उन्होंने बौद्ध धम्म को केवल धार्मिक उपदेशों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शिक्षा के माध्यम से समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया। उनका विश्वास था कि यदि युवा पीढ़ी बुद्ध के विचारों को समझेगी, तो समाज में शांति, सहिष्णुता और नैतिकता का विकास होगा। इसी दृष्टि से उन्होंने विश्वविद्यालयीय शिक्षा में बौद्ध अध्ययन, शोध और अकादमिक विमर्श को प्रोत्साहित किया। उनके नेतृत्व में अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यानमालाएँ तथा शोधपरक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें देश-विदेश के विद्वानों ने भाग लिया। इससे बौद्ध दर्शन केवल पुस्तकालयों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समकालीन बौद्धिक विमर्श का सक्रिय विषय बना।

इक्कीसवीं शताब्दी में ज्ञान के वैश्वीकरण के साथ-साथ सांस्कृतिक संवाद की आवश्यकता भी बढ़ी है। डॉ. मुक्ति भटनागर ने इस आवश्यकता को समझते हुए बौद्ध धम्म को अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक कूटनीति का माध्यम बनाया। उन्होंने श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, नेपाल, वियतनाम तथा अन्य बौद्ध देशों के भिक्षुसंघों और विद्वानों के साथ सक्रिय संबंध स्थापित किए। इन संपर्कों के माध्यम से भारत की प्राचीन बौद्ध विरासत को वैश्विक मंच पर नई पहचान मिली। उनके प्रयासों से विभिन्न देशों के विद्वानों और छात्रों को भारतीय बौद्ध परंपरा से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार उन्होंने बौद्ध धम्म को अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक सद्भाव का आधार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. मुक्ति भटनागर का योगदान केवल अकादमिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था। उन्होंने बौद्ध धम्म की करुणा और सेवा की भावना को सामाजिक कार्यों से जोड़कर उसे व्यवहारिक रूप प्रदान किया। बुद्ध ने करुणा को मानव जीवन का सर्वोच्च गुण माना है। डॉ. मुक्ति भटनागर ने इसी आदर्श को अपनाते हुए चिकित्सा सेवा, गरीबों की सहायता, महिला कल्याण तथा सामाजिक उत्थान के अनेक कार्य किए। उनके लिए धम्म का वास्तविक अर्थ मानवता की सेवा था। वे मानती थीं कि यदि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों तक शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन की सुविधाएँ नहीं पहुँचतीं, तो धम्म की सार्थकता अधूरी रह जाती है। इस प्रकार उन्होंने बौद्ध मानवतावाद को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया।

महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी उनका योगदान विशेष महत्व रखता है। बौद्ध परंपरा में महाप्रजापति गौतमी, संघमित्रा और विशाखा जैसी महिलाओं ने धम्म के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आधुनिक युग में डॉ. मुक्ति भटनागर ने उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महिलाओं को शिक्षा, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान किए। उन्होंने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार माना और अनेक संस्थागत प्रयासों के माध्यम से महिलाओं को उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक विकास के अवसर उपलब्ध कराए। उनका मानना था कि जब तक महिलाएँ शिक्षित और सशक्त नहीं होंगी, तब तक समाज का समग्र विकास संभव नहीं है। इस दृष्टि से उनका कार्य बौद्ध नारी चेतना के आधुनिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है।

इक्कीसवीं शताब्दी की एक बड़ी चुनौती पर्यावरणीय संकट है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा जैव विविधता का विनाश मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। बौद्ध दर्शन प्रकृति और मानव के बीच संतुलन पर बल देता है। डॉ. मुक्ति भटनागर ने इस सिद्धांत को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण को भी अपने कार्यों का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। बोधि उपवनों की स्थापना, हरित परिसर निर्माण तथा प्रकृति के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण के माध्यम से

उन्होंने यह संदेश दिया कि पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक आवश्यकता नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक दायित्व भी है। इस प्रकार उन्होंने बौद्ध पर्यावरणवाद को व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

बौद्ध सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में भी उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। आधुनिक युग में अनेक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरें उपेक्षा का शिकार हो रही हैं। डॉ. मुक्ति भटनागर ने बुद्ध प्रतिमाओं, स्तूपों, ध्यान केंद्रों, बोधि वृक्षों तथा बौद्ध स्मारकों के निर्माण और संरक्षण के माध्यम से बौद्ध संस्कृति को जीवंत बनाए रखने का प्रयास किया। उनके लिए ये स्मारक केवल स्थापत्य संरचनाएँ नहीं थे, बल्कि सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहे और बौद्ध विरासत को केवल इतिहास के रूप में नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन का हिस्सा मानकर समझे।डॉ. मुक्ति भटनागर ने बौद्ध धम्म को आधुनिक मानव जीवन की समस्याओं से जोड़कर उसकी नई व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि बुद्ध का संदेश केवल मोक्ष या निर्वाण की चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य और वैश्विक शांति जैसे समकालीन विषयों पर भी समान रूप से लागू होता है। उनके कार्यों ने यह सिद्ध किया कि बौद्ध धम्म आज भी आधुनिक समाज के लिए दिशा-निर्देशक सिद्ध हो सकता है।

वैश्विक स्तर पर बढ़ती हिंसा और संघर्षों के बीच उन्होंने बौद्ध धम्म के शांति संदेश को विशेष महत्व दिया। उनका मानना था कि युद्ध, आतंकवाद और सामाजिक संघर्षों का स्थायी समाधान केवल राजनीतिक या आर्थिक उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए मनुष्य के भीतर करुणा, सहानुभूति और नैतिक चेतना का विकास आवश्यक है। बुद्ध का "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" का आदर्श उनके कार्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने अपने जीवन के माध्यम से यह संदेश दिया कि वास्तविक विकास वही है जो मानवता के कल्याण से जुड़ा हो।

यदि व्यापक दृष्टि से मूल्यांकन किया जाए तो डॉ. मुक्ति भटनागर ने बौद्ध धम्म के पुनर्जागरण को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने शिक्षा को ज्ञान का माध्यम, संस्कृति को पहचान का आधार, करुणा को सेवा का स्वरूप, महिला सशक्तिकरण को सामाजिक परिवर्तन का साधन, पर्यावरण संरक्षण को नैतिक दायित्व तथा अंतरराष्ट्रीय संवाद को वैश्विक सद्भाव का माध्यम बनाकर बौद्ध धम्म को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया। इस प्रकार उनका योगदान केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने बौद्ध धम्म को समकालीन मानव सभ्यता के समक्ष एक जीवंत और प्रासंगिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

संघमाता डॉ. मुक्ति भटनागर का जीवन और कार्य यह प्रमाणित करता है कि बौद्ध धम्म केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक शक्ति है। उन्होंने शिक्षा, अनुसंधान, सांस्कृतिक संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, पर्यावरण चेतना और अंतरराष्ट्रीय संवाद के माध्यम से बौद्ध धम्म को नई ऊर्जा प्रदान की। उनके प्रयासों ने बौद्ध विचारधारा को समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जोड़कर उसे अधिक व्यापक और प्रासंगिक बनाया। वे उन विरले व्यक्तित्वों में से हैं जिन्होंने बुद्ध के आदर्शों को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अपने कार्यों में साकार किया। इस दृष्टि से डॉ. मुक्ति भटनागर को इक्कीसवीं शताब्दी में बौद्ध धम्म के पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण प्रेरणास्रोत और आधुनिक धम्म-दूत के रूप में स्मरण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अम्बेडकर, भीमराव रामजी (2019). बुद्ध और उनका धम्म. नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन। (मूल प्रकाशन 1957)
2. कौसल्यायन, भदन्त आनन्द (2017). भगवान बुद्ध और उनका धम्म. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
3. राहुल सांकृत्यायन (2018)बौद्ध दर्शन. वाराणसी: किताब महल।
4. राहुल सांकृत्यायन. (2016) महामानव बुद्ध. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. नारसु, पी. लक्ष्मी. (2015) बौद्ध धर्म का सार. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. हिराकावा, अकीरा. (1993) ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन बुद्धिज़्म: फ्रॉम शाक्यमुनि टू अर्ली महायान. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. Harvey, P. (2013). An Introduction to Buddhism: Teachings, History and Practices (2nd ed.). Cambridge: Cambridge University Press.
8. Keown, D. (2013). Buddhism: A Very Short Introduction (2nd ed.). Oxford: Oxford University Press.
9. Gombrich, R. (2006). Theravada Buddhism: A Social History from Ancient Benares to Modern Colombo (2nd ed.). London: Routledge.
10. Queen, C. S., & King, S. B. (Eds.). (1996). Engaged Buddhism: Buddhist Liberation Movements in Asia. Albany, NY: State University of New York Press.

11. Phan, P. C. (2006). Global healing and reconciliation: The gift and task of religion—A Buddhist-Christian perspective. Buddhist-Christian Studies, 26, 89–108.
12. डॉ. अतुल कृष्ण (2025) जीवन तरंगिणी मेरी जीवन यात्रा : भाग 3 वर्ष 1991 से 2001 तक। मेरठ: विद्या प्रकाशन मंदिर प्रा. लि.।
13. डॉ. अतुल कृष्ण (2025) राष्ट्र-अनुभूति (माध्यमिक संस्करण भाग-1)। मुजफ्फरनगर: वत्स मीडिया एंड पब्लिशिंग हाउस।
14. डॉ. अतुल कृष्ण (2026) जीवन तरंगिणी मेरी जीवन यात्रा : भाग 4 वर्ष 2001 से 2010 तक। मेरठ: विद्या प्रकाशन मंदिर प्रा. लि.।